आदर्श प्रश्न–पत्र
विषय–हिन्दी
कक्षा : 10
केवल–प्रश्नपत्र

समयः तीन घण्टे 15 मिनट पूर्णांक–70

निर्देश : प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित है।

1.(क) निम्नलिखित कथनों मे से कोई एक कथन सही है, उसे पहचान कर लिखिए। 1

(i) 'कलम का सिपाही' डा0 रामविलास शर्मा की रचना है।

(ii) 'मेरी असफलताएँ' बाबू गुलाबराय की रचना है।

(iii) डा0 रामकुमार वर्मा प्रसिद्ध उपन्यासकार थे।

(iv) 'गोदान' धर्मवीर भारती का नाटक है।

(ख) निम्नलिखित कृतियों मे से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए। 1

(i) विचारवीथी

(ii) संस्कृति के चार अध्याय

(iii) अशोक के फूल

(iv) चन्द्रगुप्त

(ग) किसी एक 'आत्मकथा' लेखक का नाम लिखिए। 1

(घ) 'परीक्षागुरू' किस विधा की रचना है? 1

(ड़) 'हंस' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए। 1

2. (क) रीतिकाल की दो प्रवृत्तियाँ लिखिए। 1+1=2

(ख) 'मुकुल' तथा 'युगवाणी' के रचयिता के नाम लिखिए। 1+1=2

(ग) निम्नलिखित रचनाओं मे से किसी एक रचना के कवि का नाम लिखिए। 1

(i) प्रेम–वाटिका

(ii) गीतावली

(iii) रामचन्द्रिका

3. निम्नलिखित गद्यांशों मे से किसी एक के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2+2+2=6

(क) विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषधि है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों मे हमें दृढ़ करेंगें, दोष और त्रुटियों से हमें बचाएँगें, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगें, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगें, तब वे हमें सचेत करेंगें, जब हम हतोत्साहित होगें तब हमें उत्साहित करेंगें सारांश यह है कि वे हमें उत्तमता पूर्वक जीवन–निर्वाह करने में हर तरह से सहायता देगें। **सच्ची मित्रता में उत्तम से उत्तम वैध की–सी निपुणता और परख होती है, अच्छी से अच्छी माता का सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न पुरूष को करना चाहिए।**

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) हमें अपने मित्रों से क्या आशा करनी चाहिए?

(ख) मैं तो यही समझता हूँ कि **यदि हमें अपने समाज और देश में उन सब अन्यायों और अत्याचारों की पुनरावृत्ति नहीं करनी है, जिनके द्वारा आज के सारे संघर्ष उत्पन्न होते है, तो हमें अपनी ऐतिहासिक नैतिक चेतना या संस्कृति के आधार पर ही अपनी आर्थिक व्यवस्था बनानी चाहिए** अर्थात् उसके पीछे वैयक्तिक लाभ और भोग की भावना प्रधान न होकर वैयक्तिक त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना ही प्रधान होनी चाहिए। हमारे प्रत्येक देशवासी को अपने सारे आर्थिक व्यापार उसी भावना से प्रेरित होकर करने चाहिए। वैयक्तिक स्वार्थों और स्वत्वों पर जोर न देकर वैयक्ति कर्तव्य और सेवा–निष्ठा पर जोर देना चाहिए।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) हमें किस प्रकार की कर्तव्य भावना पर जोर देना चाहिए?

4. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य सौन्दर्य भी लिखिए। 1+4+1=6

(क) मैं अपनी सब गाइ चरैहौं।

प्रात होत बल कै संग जैहों, तेरे कहैं, न रैहौं।।

ग्वाल बाल गाइनि के भीतर, नैकहूँ डर नहीं लागत।

आजु न सोवौं नंद–दुहाई, रैनि रहौंगौ जागत।।

और ग्वाल सब गाइ चरैहैं, मैं घर बैठो रैहौं?

सूर स्याम तुम सोइ रहौ, अब, प्रात जान मैं दैहौं।।

(ख) बढ़ अकेला।

यदि कोई संग तेरे पन्थ वेला

बढ़ अकेला!

चरण ये तेरे रूके ही यदि रहेंगें,

देखने वाले तुझे, कह, क्या कहेंगें,

हो न कुण्ठित, हो न स्तम्भित

यह मधुर अभियान वेला।

बढ़ अकेला!

5.(क) निम्नलिखित लेखकों मे से किसी एक का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए उनकी एक रचना का नाम लिखिए : 2+1=3

(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(ii) डा0 राजेन्द्र प्रसाद

(iii) जय प्रकाश भारती

(ख) निम्नलिखित कवियों मे से किसी एक कवि का जीवन परिचय देते हुये उनकी एक रचना का नाम लिखिए : 2+1=3

(i) तुलसीदास

(ii) महादेवी वर्मा

(iii) सुभद्रा कुमारी चौहान

6. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 1+3=4

वाराणस्यां प्रचीनकालदेव गेहे विद्यायाः दिव्यं ज्योति द्योतते। अधुनाऽपि अत्र संस्कृतवाग्धारा सततं प्रवहति, जनानां ज्ञान¥च वर्द्धयति। अत्र अनेके आचार्याः मूर्धन्याः विद्वांसः वैदिकवाड्.मयस्य अध्ययने अध्यापने च इदानी निरताः। न केवलं भारतीयाः अपितु वैदेशिकाः गीर्वाणवाण्या अध्ययनाय अत्र आगच्छन्ति निःशुल्कं च विद्यां गृहन्ति।

अथवा

मानं हित्वा प्रियो भवति क्रोधं हित्वा न शोचति।

कामं हित्वार्धवान् भवति लोभं हित्वा सुखी भवेत।।

7.(क) अपनी पाठ्यपुस्तक से कण्ठस्थ एक श्लोक लिखिए जो इस प्रश्न–पत्र में न आया हो। 2

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए : 1+1=2

(i) वाराणसी कस्याः केन्द्रस्थली अस्ति?

(ii) पुरूराजः केन सह युद्धम् अकरोत्?

(iii) चन्द्रशेखरः स्वनाम् किम् अकथयत्?

(iv) दानेन का वर्धते?

8.(क) हास्य अथवा करूण रस की परिभाषा लिखिए तथा एक उदाहरण दीजिए। 2

(ख) रूपक अथवा उत्प्रेक्षा अलंकार की परिभाषा एवं उदाहरण लिखिए। 2

(ग) सोरठा अथवा रोला छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए। 2

9.(क) निम्नलिखित उपसर्गों मे से किन्हीं तीन के मेल से एक–एक शब्द बनाइएः 1+1+1=3

(i) सह

(ii) अभि

(iii) सु

(iv) उप

(v) अनु

(vi) परि

(ख) निम्नलिखित मे से किन्हीं दो प्रत्ययों का प्रयोग करके एक–एक शब्द बनाइए : 1+1=2

(i) ता

(ii) त्व

(iii) वट

(iv) आई

(v) पन

(vi) ळअ

(ग) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के समास विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए : 1+1=2

(i) नीलकमल

(ii) सप्ताह

(iii) पीताम्बर

(iv) यश–अपयश

(v) चन्द्रमुख

(घ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के तत्सम रूप लिखिएः 1+1=2

(i) कबूतर

(ii) अँगूठा

(iii) ब्याह

(iv) मानुस

(v) मिट्टी

(ड.) निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दो के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिएः 1+1=2

(i) अग्नि

(ii) इच्छा

(iii) कामदेव

(iv) भ्रमर

(v) वृक्ष

10.(क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो में सन्धि कीजिए और सन्धि का नाम लिखिएः 1+1=2

(i) अति + आचारः

(ii) मातृ + आजा

(iii) इति + अत्र

(iv) महा + औषधि

(v) सदा + एव

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक की धातु, लकार, पुरूष तथा वचन का उल्लेख कीजिएः 2

(i) पठिष्यतः

(ii) हसावः

(iii) पचामि

(ग) निम्नलिखित शब्दों के रूप पंचमी विभक्ति बहुवचन में लिखिए : 1+1=2

(i) मति अथवा नदी

(ii) मधु अथवा युष्मद्

(घ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों का संकृत में अनुवाद कीजिए। 2

(i) सरोवर में कमल खिलते हैं।

(ii) ताजमहल यमुना किनारे पर स्थित है।

(iii) विधा विनय से बढ़ती है।

(iv) तुम दोनों घर जाओं।

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिएः 6

(i) कम्प्यूटर का महत्व

(ii) भारत में भ्रष्टाचार की समस्या

(iii) पर्यावरण प्रदूषण

(iv) पुस्तकालय से लाभ

(vi) विद्यार्थी और देशप्रेम

12. निम्नांकित प्रश्नों मे से, स्वपठित खण्डकाव्य से सम्बन्धित किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिएः 3

(क) (i) 'मुक्ति–दूत' खण्डकाव्य के अन्तिम सर्ग (पंचम सर्ग) की कथा संक्षेप में लिखिए।

(ii) 'मुक्ति–दूत' खण्डकाव्य के नायक की प्रधान विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ख) (i) 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर 'जवाहर लाल नेहरू' का चरित्र–चित्रण कीजिए।

(ii) 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य में व्यक्त राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए।

(ग) (i) 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए।

(ii) 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के आधार पर सिद्ध कीजिए कि सुभाषचन्द्र बोस त्याग, अदम्य उत्साह तथा नेतृत्व क्षमता के मूर्तिमान प्रतीक थे।

(घ) (i) 'अग्रपूजा' के नायक का चरित्र–चित्रण कीजिए।

(ii) 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग (समारम्भ सर्ग) का सारांश लिखिए।

(ङ.) (i) 'कर्ण' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

(ii) 'कण' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण की दानवीरता पर प्रकाश डालते हुए उसके अन्य गुणों का वर्णन कीजिए।

(च) (i) 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए।

(ii) 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के आधार पर चन्द्रशेखर आजाद के क्रान्तिकारी स्वरूप का चित्रण कीजिए।

(छ) (i) 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के आधार पर भामाशाह की देशभक्ति तथा त्याग भावना पर प्रकाश डालिए।

(ii) 'मेवाड़ मुकुट' के प्रथम सर्ग 'अरावली' का सारांश लिखिए।

(ज) (i) 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य में वर्णित भारत के अयोध्या आगमन का चित्रण कीजिए।

(ii) 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर भरत का चरित्र–चित्रण कीजिए।

(झ) (i) 'तुमुल' खण्डकाव्य के किसी एक सर्ग की कथावस्तु लिखिए।

(ii) 'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर मेघनाद का चरित्र–चित्रण कीजिए।

विषय : हिन्दी
कक्षा : 10th
हल पत्र

1.(क) 'मेरी असफलताएँ' बाबू गुलाबराय की रचना है।

(ख)

	कृतियाँ	**लेखक**
(i)	विचारवीथी	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(ii)	संस्कृति के चार अध्याय	रामधारी सिंह 'दिनकर'
(iii)	अशोक के फूल	हजारी प्रसाद द्विवेदी
(iv)	चन्द्रगुप्त	जयशंकर प्रसाद

(ग) आत्मकथा लेखक–हरिवंश राय 'बच्चन'।

(घ) 'परीक्षा गुरू' उपन्यास विधा की रचना है।

(ड़) 'हंस' पत्रिका के सम्पादक प्रेमचन्द्र जी हैं।

2(क) रीतिकाल की दो प्रवृत्तियाँ निम्न है–

(i) रीतिग्रन्थों का निर्माण

(ii) श्रृंगार की प्रधानता

(ख)

कृतियाँ	**रचयिता**
मुकुल	सुभद्रा कुमारी चौहान
युगवाणी	सुमित्रानन्दन पंत

(ग)

रचनाएँ	**कवि**
(i) प्रेम–वाटिका	रसखान
(ii)गीतावली	तुलसीदास
(iii) रामचन्द्रिका	केशवदास

3.(क) **(i) सन्दर्भ–**प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित ''मित्रता'' शीर्षक पाठ से उद्घृत किया गया है जिसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। इस पाठ में लेखक ने सच्चे मित्र के गुणों का वर्णन किया है।

(ii) **व्याख्या**–अच्छे मित्र में उत्तम वैद्य के समान निपुणता तथा परख होती है। जैसे अच्छा वैद्य रोगी के शारीरिक दोषों को चतुरता से समझ लेता है और रोग की परख करके उसकी उचित चिकित्सा करता है, उसी प्रकार सच्चा मित्र अपने मित्र की बुराईयों को समझकर बड़ी चतुराई से उन बुराइयों को दूर करता है। उत्तम मित्र में अच्छी माता के समान धैर्य और कोमलता होती है। जिस प्रकार सन्तान के थोड़े से भी कष्ट को देखकर माता का कोमल हृदय पसीज उठता है और वह बड़े धैर्य के साथ सन्तान के कष्टों को दूर करने का उपाय करती है ठीक उसी प्रकार सच्चा मित्र भी अपने मित्र के कष्टों से दुःखी होता है और मित्र के कष्ट को दूर करने का उपाय सोचता है। प्रत्येक मनुष्य को इसी प्रकार के लोगों से मित्रता करनी चाहिए।

(iii) उत्तम मित्र से अपेक्षा रखनी चाहिए कि वे हमें कर्मशील बनने मे उत्साहित करें। साथ ही हमें उत्तम संकल्पों से दृढ़ करेंगें, दोषों और त्रुटियों से बचायें, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेगें, कुमार्ग तथा हताशा से बचायेगें।

3(ख) **(i) सन्दर्भ**–प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक में संकलित 'भारतीय संस्कृति' पाठ से उद्धृत किया है। इसके लेखक डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या–प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक कहता है कि देश में अन्याय और अत्याचारों की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। इसी से समाज में संघर्ष उत्पन्न होता है। हमें नैतिकता पर ध्यान देना चाहिए और ऐसी आर्थिक व्यवस्था बनानी चाहिए जिसमें मनुष्य के त्याग की भावना सम्मिलित हो। समाज के कल्याण की ओर भी हमें ध्यान देना चाहिए, तभी भारतीय संस्कृति पर आधारित आर्थिक ढाँचा निर्मित हो सकेगा। हम जो भी धन अर्जित करें उसके मूल में लोक कल्याण की भावना निहित होनी चाहिए।

(iii) हमें वैयक्तिक लाभ और भोग की त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना पर जोर देना चाहिए।

4.(क) **सन्दर्भ**–प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य संकलन' के 'पद' नामक पाठ से उद्धत है। इसके रचयिता सूरदास जी हैं।

प्रसंग–श्रीकृष्ण अपने साथियों के साथ वन में गाय चराने के लिये जाने का हठ करते हैं।

व्याख्या–श्री अपनी माता यशोदा से कहते हैं कि हे माता! मैं अपनी सारी गायों को चराने के लिये वन जाऊँगा। प्रातःकाल होते ही मैं भैया बलराम के साथ वन में जाऊँगा। मैं तेरे कहने पर घर पर नहीं रूकूँगा। ग्वालों और गायों के बीच मुझे तनिक भी डर नहीं लगता है। मैं आज नन्द बाबा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैं रात भर नहीं सोऊँगा और जागता रहूँगा। ताकि सुबह ग्वालों के साथ गाय चराने के लिये जा सकूँ। मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि और सभी ग्वाले गाय चराने जंगल में जायें और मैं घर पर बैठा रहूँ। ऐसा कैसे हो सकता है? इतना सुनकर माता यशोदा ने श्रीकृष्ण को आश्वासन दिया और कहा कि हे पुत्र! अब तुम सो जाओ, सुबह होने पर मैं तुम्हें गाय चराने के लिये अवश्य भेज दूँगी।

काव्य सौन्दर्य–

(1) इस पद में सूर ने श्रीकृष्ण की गाय चराने की हठ का मोहक वर्णन किया है।

(2) ब्रजभाषा का प्रयोग

(3) अलंकार–अनुप्रास

(4) रस–वात्सल्य

4(ख) **सन्दर्भ**–प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'काव्य संकलन' में कविवर त्रिलोचन शास्त्री द्वारा रचित 'बढ़ अकेला' कविता से उद्धत किया गया है।

प्रसंग–इन पंक्तियों में कवि ने एक निर्भीक पथिक को संबोधित किया

है जो अकेले अपने गन्तव्य की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है।

व्याख्या–कवि कहता है कि हे पथिक! तुम अपने गन्तव्य स्थान की दिशा में अकेले ही आगे बढ़ते चलो। यदि पथ पर चलते समय कोई तुम्हारे साथ न हो तब भी तुम रूकना मत, निरन्तर आगे बढ़ते ही रहना। यदि किसी की प्रतीक्षा में तुम रूके रहोगें तो लोग तुम्हे देखकर क्या कहेंगे! वे समझेंगे कि तुम भयभीत हो, कमजोर हो। इसलिए न तो चिन्ता करो और न ही चकित होकर रूको। यह तो तुम्हारे शुभारम्भ को प्रसन्नतादायक क्षण है, इसलिए प्रसन्न मन से अकेले ही आगे बढ़ते चलो।

काव्य सौन्दर्य–

(1) यह सफल प्रयाण गीत है।

(2) समस्त मानव प्राणियों को कवि का उत्साहवर्द्धक सन्देश है।

(3) भाषा सरल साहित्यिक खड़ीबोली है।

5.(क) (i) जीवन परिचय

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल– आपका जन्म बस्ती जिले के अगोना नामक गाँव में 1884 ई0 में हुआ। चार वर्ष की अवस्था में ये अपने पिता के साथ राठ जिला हमीरपुर चले गये और वहीं इनकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई। 1892 ई0 में इनके पिता की नियुक्ति मिर्जापुर सदर में कानूनगो के पद पर हुई। पिता जी के साथ वे मिर्जापुर आ गये। 1921 ई0 में उन्होंने मिशन स्कूल से फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त प्रयाग के कायस्थ पाठशाला इ0का0 में नाम लिखाया। किंतु गणित में कमजोर होने के कारण इण्टर की परीक्षा नहीं दे सके। मिर्जापुर में प0 केदारनाथ पाठक एवं बद्रनारायण चौधरी ''प्रेमधन'' के सम्पर्क में आकर इन्हें हिन्दी साहित्य के अध्ययन को बल मिला। यहीं पर इन्होंने हिन्दी के साथ–साथ उर्दू, संस्कृत एवं अंग्रेजी साहित्य का गहन अध्ययन किया। 1909 ई0 में ''हिन्दी शब्द सागर'' के लिये

वैतनिक सहायक के रूप में काशी आ गये। कुछ दिनों तक ''नागरी प्रचारिणी सभा'' पत्रिका का भी सम्पादन किया। तदन्तर आपकी नियुक्ति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी अध्यापक के रूप में हो गयी और वहीं 1937 में विभागाध्यक्ष हो गये। श्वास का दौरा होने के कारण 2 फरवरी 1941 को आपका देहावसान हो गया।

रचना–चिन्तामणि।

(ii) डा0 राजेन्द्र प्रसाद

जन्म– 1884 ई0, मृत्यु– 1963 ई0

जन्म स्थान– जीरादेई (छपरा–बिहार)

शिक्षा– एम.ए., एम.एल., सदैव प्रथम स्थान

अन्य बातें– अध्यापक, वकील, देशसेवा, कांग्रेस के तीर बार सभापति, सन् 1952 से 1962 ई0 तक भारत के प्रथम राष्ट्रपति।

साहित्य सेवा– निबन्धकार, आत्मकथा लेखक

भाषा शैली– वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, सरल प्रवाहमयी

रचनाएं– मेरी यूरोप यात्रा, गांधी जी की देन आदि।

(iii) जयप्रकाश भारती

जन्म– जनवरी 1936 ई0, मृत्यु– 5 फरवरी 2005 ई0

जन्म स्थान– मेरठ (उ0प्र0)

पिता– रघुनाथ सहाय (एडवोकेट)

शिक्षा– बी.एस.सी. (मेरठ)

अन्य बातें– 'नन्दन' बाल पत्रिका का सम्पादन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन से सम्पादन–कला 'विशारद' की परीक्षा उत्तीर्ण, 'दैनिक प्रताप' (मेरठ) तथा 'नवभारत टाइम्स' (नई दिल्ली) से पत्रकारिता प्रशिक्षण, प्रौढ़ रात्रि पाठशाला निःशुल्क

साहित्य सेवा– सम्पादक तथा लेखक के रूप मे

भाषा शैली– वर्णनात्मक, चित्रात्मक, परिचयात्मक, परिमार्जित खड़ी बोली, तत्सम, अंग्रेजी तथा उर्दू शब्दों का प्रयोग

रचनाएं– हिमालय की पुकार, बर्फ की गुड़िया।

5.(ख) **जीवन परिचय**

(i) तुलसीदास

जन्म– 1532 ई0 (सं0 1589), मृत्यु– 1623 ई0

जन्म स्थान– राजापुर, बाँदा (उ0प्र0)

माता तथा पिता– हुलसी, आत्माराम दुबे

गुरू– नरहरिदास, शेष सनातन

पत्नी– रत्नावली

पत्नी के सन्दर्भ में– पत्नी की भर्त्सना 'लाज न आयी आपको दौरे आयहुँ साथ' से इनकी भावधारा प्रभु की ओर उन्मुख हो गयी।

भक्ति भावना– भगवान राम के सगुण रूप की दास्यभाव से उपासना। समन्वय की भावना, लोकमंगल की भावना।

भाषा शैली– अवधी व ब्रज भाषा तथा प्रबन्ध मुक्तक, गीत, दोहा–चौपाई शैली।

रचनाएं– रामचरितमानस, विनयपत्रिका आदि।

(ii) महादेवी वर्मा

जन्म– 1907 ई0, फर्रूखाबाद (उ0प्र0) मृत्यु– 1987 ई0

शिक्षा– एम.ए. (संस्कृत)

पति– स्वरूपनारायण वर्मा

अन्य बातें– सर्वप्रथम रचनाएँ 'चाँद' पत्रिका में प्रकाशित, 'चाँद' की सम्पादिका रहीं, 'सेकसरिया' तथा 'मंगलाप्रसाद' पुरस्कार से सम्मानित, 'भारत भारती पुरस्कार', पद्यभूषण की उपाधि तथा 'यामा' (काव्य ग्रन्थ) पर ज्ञानपीठ पुरस्कार।

वर्ण्य विषय– छायावाद, रहस्यवाद, प्रकृति चित्रण वेदना तथा करूणा की प्रधानता

भाषा शैली– भावात्मक, चित्रात्मक, तत्सम शब्दों तथा शुद्ध खड़ी बोली।

रचनाएं– नीहार, रश्मि, दीपशिखा।

(iii) सुभद्रा कुमारी चौहान

जन्म– 1904 ई0, मृत्यु– 1948 ई0

जन्म स्थान– निहालपुर (इलाहाबाद)

पति– श्री लक्ष्मण सिंह चौहान

शिक्षा– प्रयाग के 'क्रास्थवेट गर्ल्स कालेज' से।

अन्य बातें– गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित, कई बार जेल गयी, मध्यप्रदेश विधानसभा की सदस्य रहीं, 'मुकुल' काव्य संग्रह पर 'सेक्सेरिया पुरस्कार'।

वर्ण्य विषय– राष्ट्रभक्ति, वात्सल्य–प्रेम, प्रणय प्रधान रचनाएँ।

भाषा शैली– सरल खड़ी बोली, ओज, प्रसाद एवं माधुर्य गुण।

रचनाएं– मुकुल, त्रिधारा आदि।

6. **सन्दर्भ–**प्रस्तुत संस्कृत गद्यावतरण संस्कृत परिचायिका के अन्तर्गत संगृहीत ''वाराणसी'' नामक पाठ से अवतरित किया गया है।

अनुवाद–

वाराणसी में प्राचीनकाल से घर–घर में विद्या का दिव्य प्रकाश चमक रहा है। इस समय भी यहाँ संस्कृत वाणी की धारा निरन्तर बहती है। और मनुष्यों का ज्ञान बढ़ाती है। यहाँ अनेक श्रेष्ठ आचार्य विद्वान वैदिक साहित्य के अध्ययनों में इस समय लगे हुये हैं। केवल भारतीय ही नहीं बल्कि विदेशी लोग भी संस्कृत के अध्ययन के लिये यहाँ आते हैं और बिना किसी शुल्क के विद्या ग्रहण करते हैं।

अथवा

सन्दर्भ– प्रस्तुत गरिमामय श्लोक उपदेशात्मक पंक्तिया 'संस्कृत परिचायिका' के अन्तर्गत संगृहीत 'जीवन–सूत्राणि' पाठ से अवतरित है।

अनुवाद– मनुष्य अभिमान को छोड़कर प्रिय होता है क्रोध को छोड़कर शोक नहीं करता है। इच्छा को छोड़कर धनवान होता है। लोभ को

छोड़कर सुखी होता है।

7.(क) **श्लोक–**

माता गुरूतरा भूमेःखात् पितोच्चतरस्तथा।

मनः शीघ्रतरं वातात् चिन्ता बहुतरी तृणात्।।

नोट– इसी प्रकार कोई एक कण्ठस्थ श्लोक लिख सकते है।

(ख) (i) वाराणसी भारतीय संस्कृते, संस्कृत भाषायाश्च केन्द्रस्थलं अस्ति।

(ii) पुरूराजः अलक्षेन्द्रेण सह युद्धम् अकरोत्।

(iii) चन्द्रशेखरः स्वनाम ''आजाद'' इति अकथयत्।

(iv) दानेन कीर्तिः वर्धते।

8.(क) **हास्य रस–**विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से पूर्णता को प्राप्त 'हास' नामक मनोविकार हास्यरस उत्पन्न करता है।

उदाहरण–विंध्य के वासी उदासी तपोवृत धारी महा बिनु नारि दुखारे।
गौतम तीय तरी तुलसी, सो कथा सुनि भे मुनिवृन्द सुखारे।
है हैं सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद मंजुल कंज तिहारे।
कीन्हि भली रघुनायक जू करूना करि कानन को पगु धारे।

अथवा

करूण रस– इसका स्थायी भाव 'शोक' है जहाँ शोक नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव तथा संचारी भावों के संयोग से रस रूप में परिणत हो, वहाँ करूण रस होता है।

उदाहरण–

हा! वृद्धा के अतुल धन हा! वृद्धता के सहारे!
हा! प्राणों के परम प्रिय हा! एक मेरे दुलारे!
हा! शोभा के सदन सम हा! रूप लावण्य हारे!
हा! बेटा हा! हृदय धन हा! नेत्र तारे हमारे!

यहाँ यशोदा के शोक का वर्णन है।

(ख) **उत्प्रेक्षा अलंकार–**जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाए, वहाँ

उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। जनु, जानो, मनु, मानो आदि इसके वाचक शब्द है।

उदाहरण–

सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।

मनो नीलमनि शैल पर, आतप परयौ प्रभात।।

इस दोहे में 'पीत पट' में आतप तथा 'स्याम सलोने गात' में नीलमनि शैल की सम्भावना प्रकट की गयी है और 'मनो' शब्द का प्रयोग भी है, अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

अथवा

रूपक अलंकार– जहाँ उपमेय मे उपमान का आरोप करके दोनो में अभेद कर दिया जाये, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण–

चरन–कमल बन्दौ हरि राई।

यहाँ ईश्वर के चरण अर्थात् पैर और कमल में अभेद किया गया है।

(ग) **सोरठा छन्द–**सोरठा छन्द की रचना 'दोहा' छन्द के चरणों के क्रम को उलट देने पर होती है। इसके विषम चरणों में ग्यारह–ग्यारह तथा सम चरणों में तेरह–तेरह मात्रायें होती है।

उदाहरण–

ऽ ।।।। ।। ऽ।

जे सुमिरत सिधि होई, 11 मात्रायें

।।ऽ।। ।।।। ।।।

गननायक करिवर बदन 13 मात्रायें

।।। ।।ऽ। ऽ।

करहु अनुग्रह सोय 11 मात्रायें

।ऽ ऽ। ।। ।। ।।।

बुद्धि–रासि सुभ–गुन–सदन।। 13 मात्रायें

अथवा

रोला छन्द– रोला सममात्रिक छन्द है। इसके चार चरण होते है। प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती है। 11 तथा 13 मात्राओं पर यति होती है।

उदाहरण–

। । । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ = 11 + 13 = 24 मात्राएँ

कबहुँ सुधार अपार, वेग नीचे को धावै।

। । । ऽ । । ऽ । । । । ऽ । । । । ऽ ऽ = 11 + 13 = 24 मात्राएँ

हरहराति जहराति, सहस जोजन चलि आवै।।

। । । । । । । । ऽ । ऽ । । । । । ऽ ऽ। । = 11 + 13 = 24 मात्राएँ

मनु विधि चतुर किसान, पौन निज मन कौ पावत।

। ऽ ऽ । । । ऽ ऽ। ऽ ऽ । । ऽ । । = 11 + 13 = 24 मात्राएँ

पुन्य खेत उत्पन्न, हीर की रासि उसावत।। **–रत्नाकर**

9.(क) (i) सह – सहकर्मी

(ii) अभि – अभियान

(iii) सु – सुमार्ग

(iv) उप – उपहार

(v) अनु – अनुगमन

(vi) परि – परिग्रह

(ख) (i) ता – सज्जनता

(ii) त्व – बन्धुत्व

(iii) बट – लिखावट

(iv) आई – कठिनाई

(v) पन – बचपन

(vi) हट – जगमगाहट

(ग)	**सामासिक शब्द**	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
	(i) नीलकमल	नीला है जो कमल	कर्मधारय समास
	(ii) सप्ताह	सात दिनों का समूह	द्विगु समास

(iii)	पीताम्बर	पीला है अंबर जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण	बहुब्रीहि समास
(iv)	यश–अपयश	यश और अपयश	द्वन्द्व समास
(v)	चन्द्रमुख	चन्द्रमा के समान मुख	कर्मधारय समास

(घ)

	तदभव	तत्सम
(i)	कबूतर	कपोत
(ii)	अंगूठा	अंगुष्ठ
(iii)	व्याह	विवाह
(iv)	मानुस	मनुष्य
(v)	मिट्टी	मृत्तिका

(ड़)

	शब्द	पर्यायवाची
(i)	अग्नि	अनल, पावक
(ii)	इच्छा	अभिलाषा, कामना
(iii)	कामदेव	मनोज, मदन
(iv)	भ्रमर	मधुप, अलि
(v)	वृक्ष	विटप, तरू

10(क)

	सन्धि		सन्धि का नाम
(i)	अति + आचार – अत्याचार	=	यण सन्धि
(ii)	मातृ + आज्ञा – मात्राज्ञा	=	यण सन्धि
(iii)	इति + अत्र – इत्यत्र	=	यण सन्धि
(iv)	महा + औषधि – महौषधि	=	वृद्धि सन्धि
(v)	सदा + एव – सदैव	=	वृद्धि सन्धि

(ख)

		धातु	लकार	पुरूष	वचन
(i)	पठिष्यतः	पठ्	लृट्	प्रथम	द्विवचन
(ii)	हसावः	हस्	लट्	उत्तम	द्विवचन
(iii)	पचामि	पच्	लट्	उत्तम	एकवचन

(ग) **पंचमी विभक्ति बहुवचन**

(i) मति – मतिभ्यः, नदी–नदीभ्यः

(ii) मधु – मधुभ्यः, युष्मद–युष्मत्

(घ) **अनुवाद–**

(i) सरोवर में कमल खिलते हैं।

सरोवरे कमलानि विकसन्ति।

(ii) ताजमहल यमुना किनारे पर स्थित है।

ताजमहल यमुना तटे स्थितः अस्ति।

(iii) विद्या विनय से बढ़ती है।

विद्या विनयात् वर्धते।

(iv) तुम दोनों घर जाओ।

युवाम गृहं गच्छतम्

11. **निबन्ध**

(i) कम्प्यूटर का महत्व

रूपरेखा : 1–प्रस्तावना, 2–कम्प्यूटर और उसके उपयोग, 3–कम्प्यूटर का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग, 4–कम्प्यूटर और मानव मस्तिष्क, 5–उपसंहार।

(ii) भारत में भ्रष्टाचार की समस्या

रूपरेखा : 1–प्रस्तावना, 2–भ्रष्टाचार का अर्थ, 3–भारत में बढ़ता भ्रष्टाचार, 4–भ्रष्टाचार के कारण, 5–भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय, 6–उपसंहार।

(iii) पर्यावरण प्रदूषण

रूपरेखा : 1–प्रस्तावना, 2–प्रदूषण से तात्पर्य, 3–प्रदूषण के प्रकार–जल, वायु, ध्वनि, रासायनिक, रेडियोधर्मी प्रदूषण, 4–प्रदूषण रोकने के उपाय, 5–उपसंहार।

(iv) पुस्तकालय से लाभ

रूपरेखा : 1–प्रस्तावना, 2–पुस्तकालय का अर्थ, 3–पुस्तकालयों के प्रकार, 4–पुस्तकालय का महत्व, 5–कुछ प्रसिद्ध पुस्तकालय,

6–पुस्तकालयों के प्रति हमारा कर्त्तव्य, 7–सुझाव, 8–उपसंहार।

(v) विद्यार्थी और देशप्रेम

रूपरेखा : 1–प्रस्तावना, 2–स्वदेश प्रेम का तात्पर्य और उसकी उपयोगिता, 3–स्वदेश प्रेम का वास्तविक स्वरूप, 4 स्वदेश प्रेम के कुछ उदाहरण, 5–उपसंहार।

12. (ख) 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य

(i) जवाहर लाल नेहरू का चरित्र–चित्रण–

'ज्योति जवाहर' काव्य के नायक हमारे राष्ट्रनायक पं0 जवाहर लाल नेहरू हैं। नेहरू जी के चरित्र में निम्नलिखित विशेषतायें पायी जाती है।

युगावतार– कवि ने नेहरू जी को युगावतार का रूप दिया है। उनके व्यक्तित्व में समस्त भारतीय महापुरूषों तथा सांस्कृतिक विशेषताओं का समन्वय पाया जाता है।

महानवीर– हमारे राष्ट्रनायक में वीरता का महान गुण है। उनमें अपार उत्साह है। बाधाओं और आपत्तियों का साहास के साथ सामना करते हुए आगे बढ़ते गये। उन्होंने कहा था–'मुझमें कोमलता है लेकिन कायरता मेरा धर्म नहीं।'

भावात्मक एकता–नेहरू जी में राष्ट्रीय भावात्मक एकता सुदृढ़ रूप में मौजूद है। सब धर्म उनके लिए समान हैं। सम्पूर्ण राष्ट्र को उन्होंने एकता के सूत्र में बांधने का प्रयत्न किया है।

त्याग भावना– नेहरू जी का जीवन त्याग और बलिदान से पूर्ण है। उन्होंने अपना तन–मन–धन सब कुछ देश के लिए अर्पित कर दिया।

उपर्युक्त के अतिरिक्त नेहरू जी में अनेक दिव्य गुण पाये जाते हैं। उन्हें मानवता से प्रेम है। आत्मविश्वास, स्वाभिमान, सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि गुण विद्यमान हैं।

(ख) **(ii) उत्तर–**'ज्योति जवाहर' खण्ड का कथानक राष्ट्रनायक जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व पर आधारित है। कवि ने नेहरू जी

के व्यक्तित्व को भावात्मक एकता का प्रतीक माना हैं भारत के विभिन्न महापुरूषों के विचारों और भावनाओं को नेहरू जी के चरित्र में प्रस्तुत कर कवि ने राष्ट्र की एकता और अखण्डता को प्रतिष्ठापित किया है। नेहरू जी के व्यक्तित्व के निर्माण के लिए ही कथानक का सारा ताना–बाना बुना गया है। भावात्मक एकता की पुष्टि के लिए ही कवि ने भारत के गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश तथा कश्मीर आदि प्रदेशों के गौरव का वर्णन किया है। ये सभी राज्य भारत की महिमा को प्रकट करते हैं।

कबीर, सूर और तुलसी, रामानुजाचार्य और शंकराचार्य, बुद्ध और गाँधी, महावीर और अप्पा आदि सभी सन्तों, महात्माओं तथा महापुरूषों के विचारों, भावनाओं और सिद्धान्तों को नेहरू के व्यक्तित्व में दिखाकर कवि ने उन्हें एकता एवं अखण्डता का प्रतीक बना दिया है। प्रस्तुत खण्डकाव्य की भूमिका में कवि स्वयं इस विषय में कहता है–

''जो लोग पूर्व–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण का प्रश्न उठाकर जाति, भाषा, सम्प्रदाय और रीति–रिवाजों की संकुचित मनोवृत्ति के आधार पर अलगाव और विघटन की बातें करते हैं, वे यह भूल जाते हें कि भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता सदियों से अपनी अखण्डता का उद्घोष करती हुई समानताओं एवं विषमताओं की चट्टानों को तोड़ती हुई निरन्तर आगे बढ़ती जा रही है।''

तात्पर्य यह है कि प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथावस्तु लौकिकता की आधार भूमि पर अवतरित अवश्य होती है किन्तु वह विविध राष्ट्रीय विशेषताओं को अपने में समेटती हुई चलती है जिनके कारण इस विशाल राष्ट्र में भौगोलिक स्थिति, जलवायु, रहन–सहन, अचार–विचार, भाष तथा धार्मिक मान्यता की जो अनेक विभिन्नतायें हैं, वे सब लोकनायक जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व में समाहित हो जाती है। इस प्रकार जवाहरलाल नेहरू का व्यक्तित्व राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का प्रतीक बन कर पाठकों के हृदय में एक अखण्ड राष्ट्र का चित्र उपस्थित करता है।